Capitalism पूंजीवाद

Capitalism is an economic and political system in which all economic activities of a country are controlled by private ownership for profit. It is an economic system where money buys materials, technologies and labour to produce products and Services. It is the most productive economic system .Capitalism empowered anyone who had capital to produce something to offer the public, poor.

पूंजीवाद एक आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था है जिसमें किसी देश की सभी आर्थिक गतिविधियाँ लाभ के लिए निजी स्वामित्व द्वारा नियंत्रित होती हैं। यह एक ऐसी आर्थिक व्यवस्था है जहाँ मुद्रा उत्पादों और सेवाओं के उत्पादन के लिए सामग्री, तकनीक और श्रम खरीदती है। यह सबसे अधिक उत्पादक आर्थिक व्यवस्था है।पूंजीवाद ने पूंजी रखने वाले किसी भी व्यक्ति को जनता, गरीबों और अन्य लोगों को कुछ देने के लिए कुछ उत्पादन करने का अधिकार दिया।

STAGES OF RISE OF CAPITALISM.

There are three main stages of capitalism

1.Mercantile Capitalism-

The Period between 14th to 18th century is considered as the period of mercantile capitalism. During this period, capitalism was a system of trading goods outside of local market to increase profit. It created middle man in mercantile activities.

It also prepared the way to establish corporations, joint stock companies etc for example British East India company. These Corporations operated their trade through brokers. The Atlantic triangle trade (Slaves, Rum, Sugar) developed, during this period. It moved people and goods among Africa, America and Europe.

पूंजीवाद के उदय के चरण।

पूंजीवाद के तीन मुख्य चरण हैं

1. व्यापारिक पूंजीवाद-

14वीं से 18वीं शताब्दी के बीच के काल को व्यापारिक पूँजीवाद का काल माना जाता है। इस काल में, पूँजीवाद लाभ बढ़ाने के लिए स्थानीय बाज़ार के बाहर वस्तुओं का व्यापार करने की एक प्रणाली थी। इसने व्यापारिक गतिविधियों में बिचौलियों का निर्माण किया।

इसने निगमों, संयुक्त स्टॉक कंपनियों आदि की स्थापना का मार्ग भी प्रशस्त किया, उदाहरण के लिए ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी। ये निगम दलालों के माध्यम से अपना व्यापार संचालित करते थे।इस काल में अटलांटिक त्रिभुज व्यापार (दास, रम, चीनी) विकसित हुआ । इसने अफ्रीका, अमेरिका और यूरोप के बीच लोगों और वस्तुओं का परिवहन किया।

2. Competitive Capitalism (18th century to Great depression)

This period of capitalism was inspired by the Ideas of a Scottish professor Adam Smith who argued that neither commerce nor agriculture but only labour is the source of wealth. His masterpiece “wealth of nations" written in 1776 inspired many nations to move towards a Free market economy. He said that the Market should be left free because Market has invisible hand to solve its problem.

2. प्रतिस्पर्धी पूंजीवाद (18वीं शताब्दी से महामंदी तक)

पूंजीवाद का यह काल स्कॉटिश प्रोफेसर एडम स्मिथ के विचारों से प्रेरित था, जिनका तर्क था कि न तो वाणिज्य और न ही कृषि, बल्कि केवल श्रम ही धन का स्रोत है। 1776 में लिखी गई उनकी उत्कृष्ट कृति "वेल्थ ऑफ नेशंस" उन्होंने कई देशों को मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि बाजार को स्वतंत्र छोड़ देना चाहिए क्योंकि बाजार की समस्याओं को हल करने के लिए एक अदृश्य हाथ मौजूद है।

4.Keynesian Capitalism (Great depression to end of cold war)

The Heads of the state, the economists left free market ideology and its principles after stock market crash of 1929. A new era of state intervention in the economy was born which characterised as the third stage of capitalism. The goals of the state intervention were to protect national industries through state investment in social welfare programs and infrastructure. This new approach to manage economy is known as Keynesianism. It is based on the theory of British economist john Menard Keynes.

4.कीन्सियन पूंजीवाद (महामंदी से शीत युद्ध की समाप्ति तक)

1929 के शेयर बाजार में आई गिरावट के बाद राष्ट्राध्यक्षों और अर्थशास्त्रियों ने मुक्त बाजार की विचारधारा और उसके सिद्धांतों को त्याग दिया। राज्य का एक नया युग ; अर्थव्यवस्था में हस्तक्षेप का जन्म हुआ जिसे पूंजीवाद के तीसरे चरण के रूप में जाना जाता है। राज्य के हस्तक्षेप का लक्ष्य सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों और बुनियादी ढाँचे में राज्य के निवेश के माध्यम से राष्ट्रीय उद्योगों की रक्षा करना था। अर्थव्यवस्था के प्रबंधन के इस नए दृष्टिकोण को कीन्सियनवाद के रूप में जाना जाता है। यह ब्रिटिश अर्थशास्त्री जॉन मेनार्ड कीन्स के सिद्धांत पर आधारित है।

5. Socialism

Socialism is a system characterized by social ownership and democratic control of the means of production. Social ownership may refer to form public, Collective, cooperative or Citizen ownership. There are various forms of socialism but there is no Single definition encapsulating all of them. Social ownership is the common element shared its various forms.

5.समाजवाद

समाजवाद एक ऐसी व्यवस्था है जिसकी विशेषता उत्पादन के साधनों पर सामाजिक स्वामित्व और लोकतांत्रिक नियंत्रण है। सामाजिक स्वामित्व का तात्पर्य सार्वजनिक, सामूहिक, सहकारी या नागरिक स्वामित्व से हो सकता है।समाजवाद के विभिन्न रूप हैं, लेकिन उन सभी को समाहित करने वाली कोई एक परिभाषा नहीं है। सामाजिक स्वामित्व इसके विभिन्न रूपों का एक सामान्य तत्व है।

Karl Marx (1818-1883) was the father of Scientific socialism. Communist Manifesto (1840) and Das Capital (1867) were important writings of Marx. Marx presented an outline of principles and objectives of socialism. He tried to prove that the decline of Capitalistic Society and the success of Socialistic revolution are inevitable. In his view, the most significant fact of history lies in the mutual struggle of various classes. It is the materialistic concept of history of class struggle.

कार्ल मार्क्स (1818-1883) वैज्ञानिक समाजवाद के जनक थे। कम्युनिस्ट घोषणापत्र (1840) और दास कैपिटल (1867) मार्क्स की महत्वपूर्ण रचनाएँ थीं।मार्क्स ने समाजवाद के सिद्धांतों और उद्देश्यों की रूपरेखा प्रस्तुत की। उन्होंने यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि पूंजीवादी समाज का पतन और समाजवादी क्रांति की सफलता अपरिहार्य है। उनके विचार में, इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण तथ्य विभिन्न वर्गों के आपसी संघर्ष में निहित है। यह वर्ग संघर्ष के इतिहास की भौतिकवादी अवधारणा है।

The materialistic or economic interpretation of history means that economic structure of society in particular Period influences political, social, intellectual and moral climate of society. The two fundamental and vital elements of Marx's socialistic set up are materialistic concept of history and class struggle.

इतिहास की भौतिकवादी या आर्थिक व्याख्या का अर्थ है कि किसी विशेष काल में समाज की आर्थिक संरचना समाज के राजनीतिक, सामाजिक, बौद्धिक और नैतिक वातावरण को प्रभावित करती है। मार्क्स की समाजवादी व्यवस्था के दो मूलभूत और महत्वपूर्ण तत्व हैं इतिहास की भौतिकवादी अवधारणा और वर्ग संघर्ष।

It is stated in the communist manifesto that the aim of workers all over the world is to finish capitalism and establish Socialism. In its concluding part, that manifesto exhorts all the workers in these words- "Be united o'workers of the world! you have nothing to lose except your chains of slavery and you have entire world to possess".

कम्युनिस्ट घोषणापत्र में कहा गया है कि दुनिया भर के मज़दूरों का उद्देश्य पूंजीवाद का अंत करना और समाजवाद की स्थापना करना है । अपने अंतिम भाग में, वह घोषणापत्र सभी मज़दूरों का इन शब्दों में आह्वान करता है- "दुनिया के मज़दूरों, एकजुट हो जाओ! तुम्हारे पास खोने के लिए अपनी गुलामी की ज़ंजीरों के अलावा कुछ नहीं है और तुम्हारे पास पूरी दुनिया है।"

The great mission of Marx's life was to abolish capitalist society at any cost. He made great efforts to free the working classes from suffering constant struggle.It was the mission of his life. His death was honoured with love, esteem tears by millions of revolutionaries.

मार्क्स के जीवन का महान मिशन किसी भी कीमत पर पूँजीवादी समाज का उन्मूलन करना था। उसने मज़दूर वर्ग को निरंतर कष्टों से मुक्त कराने के लिए अथक प्रयास किए। यही उसके जीवन का मिशन था। उसकी मृत्यु लाखों क्रांतिकारियों द्वारा प्रेम और आदर के साथ सम्मानित किया गया।

Marx pointed out that socialism is not only desirable but inevitable. In his famous work, "Das capital" Marx analysed the working process of capitalism and hinted at these specific activities which would bring an end of Capitalism. He clarified that economic Crisis can be solved only when an individual monopoly of the sources of production is eliminated and personal profit motive is removed from the production system.

मार्क्स ने बताया कि समाजवाद न केवल वांछनीय है, बल्कि अपरिहार्य भी है। अपनी प्रसिद्ध रचना, "दास कैपिटल" में, मार्क्स ने पूंजीवाद की कार्यप्रणाली का विश्लेषण किया और उन विशिष्ट गतिविधियों की ओर संकेत किया जो पूंजीवाद का अंत कर देंगी। उसने स्पष्ट किया कि आर्थिक संकट का समाधान तभी हो सकता है जब उत्पादन के स्रोतों पर व्यक्तिगत एकाधिकार समाप्त हो जाए और उत्पादन प्रणाली से व्यक्तिगत लाभ की भावना को हटा दिया जाता है।

For that purpose, Marx supported to nationalisation of all means of production and distribution. On the strength of such a system, production will yield benefit not to few people but to the entire society.

इसी उद्देश्य से, मार्क्स ने उत्पादन और वितरण के सभी साधनों के राष्ट्रीयकरण का समर्थन किया। ऐसी प्रणाली के बल पर, उत्पादन से कुछ लोगों को नहीं, बल्कि पूरे समाज को लाभ होगा।

Marx was sure that the working class would win in the end and a Classless society would emerge. In this way, the perpetual class struggle between the exploiter and the exploited will come to an end. Then only one class, the working class, will exist in society. Marx set an ideal for the establishment of a classless society in which the welfare of society does not differ from that of an Individual.

मार्क्स को विश्वास था कि अंततः मज़दूर वर्ग की जीत होगी और एक वर्गविहीन समाज का उदय होगा। इस प्रकार, शोषक और शोषित के बीच सतत वर्ग संघर्ष का अंत हो जाएगा। तब केवल एक वर्ग, मज़दूर वर्ग, समाज में विद्यमान रहेगा। मार्क्स ने एक वर्गविहीन समाज की स्थापना का आदर्श प्रस्तुत किया जिसमें समाज का कल्याण व्यक्ति के कल्याण से भिन्न नहीं होता।

FIRST WORLD WAR (1914-11 NOV 1918)

First world war was fought between the Allied powers and the central powers.

- The Members of the allied powers were France, Russia,Britain, Japan, America, Italy etc. The members of the central powers were Germany, Austria-Hungry, the Ottoman Empire and Bulgaria etc.

Causes

There was no single reason that led to World War I. There were several reasons behind it that took place before 1914.

प्रथम विश्व युद्ध (1914-11 नवंबर 1918)

प्रथम विश्व युद्ध मित्र राष्ट्रों और केंद्रीय शक्तियों के बीच लड़ा गया था।

- मित्र राष्ट्रों के सदस्य फ्रांस, रूस, ब्रिटेन, जापान, अमेरिका, इटली आदि थे।
- केंद्रीय शक्तियों के सदस्य जर्मनी, ऑस्ट्रिया-हंगरी, ओटोमन साम्राज्य और बुल्गारिया आदि थे।

कारण

प्रथम विश्व युद्ध का कोई एक कारण नहीं था। इसके पीछे कई कारण थे जो 1914 से पहले घटित हुए थे।

1. Treaties and counter treaties to balance the power

European Countries made various mutual defensive treaties like,

- The Triple Alliance - 1882 ;it was made by Germany, Austria-Hungry and Italy etc.
- The Triple Entente - 1907 ;it was made by Britain, France and Russia.

Basically, these treaties were defensive treaties hence, If one country was attacked, allied powers were bound to defend them. Thus, there were two rival groups in Europe.

1. शक्ति संतुलन के लिए संधियाँ और प्रति-संधि

यूरोपीय देशों ने विभिन्न पारस्परिक रक्षात्मक संधियाँ कीं, जैसे,

- त्रिपक्षीय गठबंधन - 1882; यह जर्मनी, ऑस्ट्रिया-हंगरी और इटली आदि द्वारा किया गया था।
- त्रिपक्षीय संधि - 1907; यह ब्रिटेन, फ्रांस और रूस द्वारा की गई थी।

मूलतः, ये संधियाँ रक्षात्मक संधियाँ थीं, इसलिए यदि किसी देश पर आक्रमण होता, तो मित्र राष्ट्र उसकी रक्षा करने के लिए बाध्य थे। इस प्रकार, यूरोप में दो प्रतिद्वंद्वी समूह थे।

2. Imperialism

Africa and Asia were rich in raw materials for the European factories before the first-world war. Hence, European powers tried to control these resources through their colonialism & Imperialism. Thus, War became inevitable among European powers.

2. साम्राज्यवाद

प्रथम विश्व युद्ध से पहले, अफ्रीका और एशिया यूरोपीय कारखानों के लिए कच्चे माल से समृद्ध थे। इसलिए, यूरोपीय शक्तियों ने इन पर नियंत्रण करने का प्रयास किया। अपने उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद के ज़रिए संसाधनों का दोहन किया। इस प्रकार, यूरोपीय शक्तियों के बीच युद्ध अपरिहार्य हो गया।

3. Militarism

In order to power balance, an arm race had begun in early 20th century. Great Britain and Germany both strengthened their military and navies. These increase in militarism catalysed them to involve into war.

3. सैन्यवाद

शक्ति संतुलन के लिए, 20वीं सदी की शुरुआत में हथियारों की होड़ शुरू हो गई थी। ग्रेट ब्रिटेन और जर्मनी दोनों ने अपनी सेना और नौसेना को मज़बूत किया। सैन्यवाद में इस वृद्धि ने उन्हें युद्ध में शामिल होने के लिए प्रेरित किया।

4. **Nationalism**

Nationalism was glorified during this era. Each country of Europe wanted to surpass others to glorify their national feeling. Thus, nationalism led to the war.

4. राष्ट्रवाद

इस युग में राष्ट्रवाद का महिमामंडन किया गया। यूरोप का प्रत्येक देश अपनी राष्ट्रीय भावना को महिमामंडित करने के लिए दूसरों से आगे निकलना चाहता था। इस प्रकार, राष्ट्रवाद युद्ध का कारण बना।

5. **Role of Germany**

Germany was the new Imperialistic country in early 20th century. King Wilhelm-II Started an international policy to make his country Super power of the world. Thus, Germany was seen as a threat by the other powers. It destabilised the International balance.

5. जर्मनी की भूमिका

20वीं सदी के आरंभ में जर्मनी एक नया साम्राज्यवादी देश था। राजा विल्हेम द्वितीय ने अपने देश को सुपर- शक्ति बनाने के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय नीति शुरू की। विश्व की सबसे बड़ी शक्ति। इस प्रकार, जर्मनी को अन्य शक्तियों द्वारा एक खतरे के रूप में देखा गया। इसने अंतर्राष्ट्रीय संतुलन को अस्थिर कर दिया।

Immediate Cause -

Assassination of Archduke Franz Ferdinand in June 1914. he was the heir to the throne of Austria-Hungary. Slavic Bosnian nationalists (Black hand) led by Gavrilo princep were accused. They thought that the state of Serbia should control Bosnia Instead of Austria.

तात्कालिक कारण -

जून 1914 में आर्कड्यूक फ्रांज फर्डिनेंड की हत्या। वे ऑस्ट्रिया-हंगरी के सिंहासन के उत्तराधिकारी थे। गैवरिलो प्रिंसेप के नेतृत्व वाले स्लाव बोस्नियाई राष्ट्रवादियों (ब्लैक हैंड) पर आरोप लगाया गया। उनका मानना था कि सर्बिया राज्य को ऑस्ट्रिया के बजाय बोस्निया पर नियंत्रण करना चाहिए।

- After this incident, Austria-Hungary declared war on Serbia.
- Russia got involved as it had an alliance with Serbia
- Germany then declared war on Russia because Germany had an alliance with Austria-Hungary (Triple alliance).
- Britain declared war on Germany because of its invasion of neutral Belgium. Britain had agreement to Protect both Belgium and France.
- इस घटना के बाद, ऑस्ट्रिया-हंगरी ने सर्बिया के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी।
- रूस भी इसमें शामिल हो गया क्योंकि उसका सर्बिया के साथ गठबंधन था।
- फिर जर्मनी ने रूस के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी क्योंकि जर्मनी का ऑस्ट्रिया-हंगरी के साथ गठबंधन था (त्रिपक्षीय गठबंधन)।
- तटस्थ बेल्जियम पर आक्रमण के कारण ब्रिटेन ने जर्मनी के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी। ब्रिटेन ने बेल्जियम और फ्रांस दोनों की रक्षा करने का समझौता किया था।
- France declared war on Germany.
- Germany got initial success in France & Russia.
- Ottoman empire attacked on Russia. It tried to capture Suez Canal that linked Britain to Asia (India),
- Battle of Marne, Battle of the Somme, Battle of "Tannenberg, Battle of Gallipoli and the battle of verdun were fought in first word war.
- फ्रांस ने जर्मनी के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी।
- जर्मनी को फ्रांस और रूस में शुरुआती सफलता मिली।
- ओटोमन साम्राज्य ने रूस पर हमला किया। उसने स्वेज नहर पर कब्ज़ा करने की कोशिश की जो ब्रिटेन को एशिया (भारत) से जोड़ती थी।
- पहले विश्व युद्ध में मार्ने का युद्ध, सोम्मे का युद्ध, टैनेनबर्ग का युद्ध, गैलीपोली का युद्ध और वर्दन का युद्ध लड़ा गया।

Phases of the war

The conflict developed several fronts in Europe, Africa, and Asia. The two main scenarios were the western front, where the Germans confronted Britain, France and after 1917, the Americans. The second front was the Eastern Front in which the Russians fought against Germans and Austro-Hungarians.

- After a brief German advance in 1914, the western front was stabilized and a long and brutal trench warfare started. It was a 'war of attrition' (the western front remained immovable). Meanwhile on the Eastern front the Germans advanced but not decisively.
- In 1917, two events changed the course the war the United States joined the allies and Russia, After the Russian Revolution, abandoned the conflict and signed a separate peace.
- Finally after the German offensive in the Spring of 1918, the allied counter attack managed to force a decisive retreat of the German Army. "The defeat of its Germany's allies and the resolution in Germany that dethroned Wilhelm-II & (German Emperor) brought about the signing of the armistice on a Nov 11, 1918. "The great war was over.

युद्ध के चरण

इस संघर्ष ने यूरोप, अफ्रीका और एशिया में कई मोर्चे विकसित किए। दो मुख्य परिदृश्य पश्चिमी मोर्चा थे, जहाँ जर्मनों का सामना ब्रिटेन, फ्रांस और 1917 के बाद अमेरिकियों से हुआ। दूसरा मोर्चा पूर्वी मोर्चा था जहाँ रूसियों ने जर्मनों और ऑस्ट्रो-हंगेरियन के खिलाफ लड़ाई लड़ी।

- 1914 में जर्मनी की एक संक्षिप्त बढ़त के बाद, पश्चिमी मोर्चा स्थिर हो गया और एक लंबा और क्रूर खाई युद्ध शुरू हो गया। यह एक 'घर्षण युद्ध' था (पश्चिमी मोर्चा स्थिर रहा)। इस बीच, पूर्वी मोर्चे पर जर्मन आगे बढ़े, लेकिन निर्णायक रूप से नहीं।
- 1917 में, दो घटनाओं ने युद्ध की दिशा बदल दी: संयुक्त राज्य अमेरिका मित्र राष्ट्रों में शामिल हो गया और रूसी क्रांति के बाद, रूस ने संघर्ष छोड़ दिया और एक अलग शांति समझौते पर हस्ताक्षर किए।
- अंततः 1918 के वसंत में जर्मन आक्रमण के बाद, मित्र राष्ट्रों का जवाबी हमला सफल रहा। जर्मन सेना को निर्णायक रूप से पीछे हटने के लिए मजबूर किया। "जर्मनी के सहयोगियों की हार और जर्मनी में विल्हेम द्वितीय (जर्मन सम्राट) को गद्दी से हटाने वाले प्रस्ताव के परिणामस्वरूप 11 नवंबर, 1918 को युद्धविराम पर हस्ताक्षर हुए।" महान युद्ध समाप्त हो गया।

Consequences of the war

- Economic consequences
- Political consequences
- Social consequences

युद्ध के परिणाम

- आर्थिक परिणाम
- राजनीतिक परिणाम
- सामाजिक परिणाम

- The German emperor Kaiser William II fled to Holland & Germany became Republic.
- Around one crore people were killed.
- Unemployment and famine.
- The Fall of Russian empire after revolution which resulted in the formation of USSR(1922)
- Emergence of USA as a super power.
- Japan became a powerful country in Asia.
- Baltic countries - Estonia, Latvia and Lithuania became independent.
- League of Nations came into being.

- जर्मन सम्राट कैसर विलियम द्वितीय हॉलैंड भाग गए और जर्मनी गणराज्य बन गया।
- लगभग एक करोड़ लोग मारे गए।
- बेरोज़गारी और अकाल।
- क्रांति के बाद रूसी साम्राज्य का पतन जिसके परिणामस्वरूप सोवियत संघ (1922) का गठन हुआ।
- संयुक्त राज्य अमेरिका का एक महाशक्ति के रूप में उदय।
- जापान एशिया में एक शक्तिशाली देश बन गया।

- बाल्टिक देश - एस्टोनिया, लातविया और लिथुआनिया स्वतंत्र हो गए।
- राष्ट्र संघ अस्तित्व में आया।

Paris peace treated

- Brest Litovsk 3, 1918
- Treaty of Versailles - 28 June 1919

पेरिस शांति संधि

- ब्रेस्ट लिटोव्स्क 3, 1918
- वर्साय की संधि - 28 जून 1919